साँप ने सोचा

कहानीः अशोक हुसैन
चित्रः बिदिया पुरबिया

एकलव्य का प्रकाशन

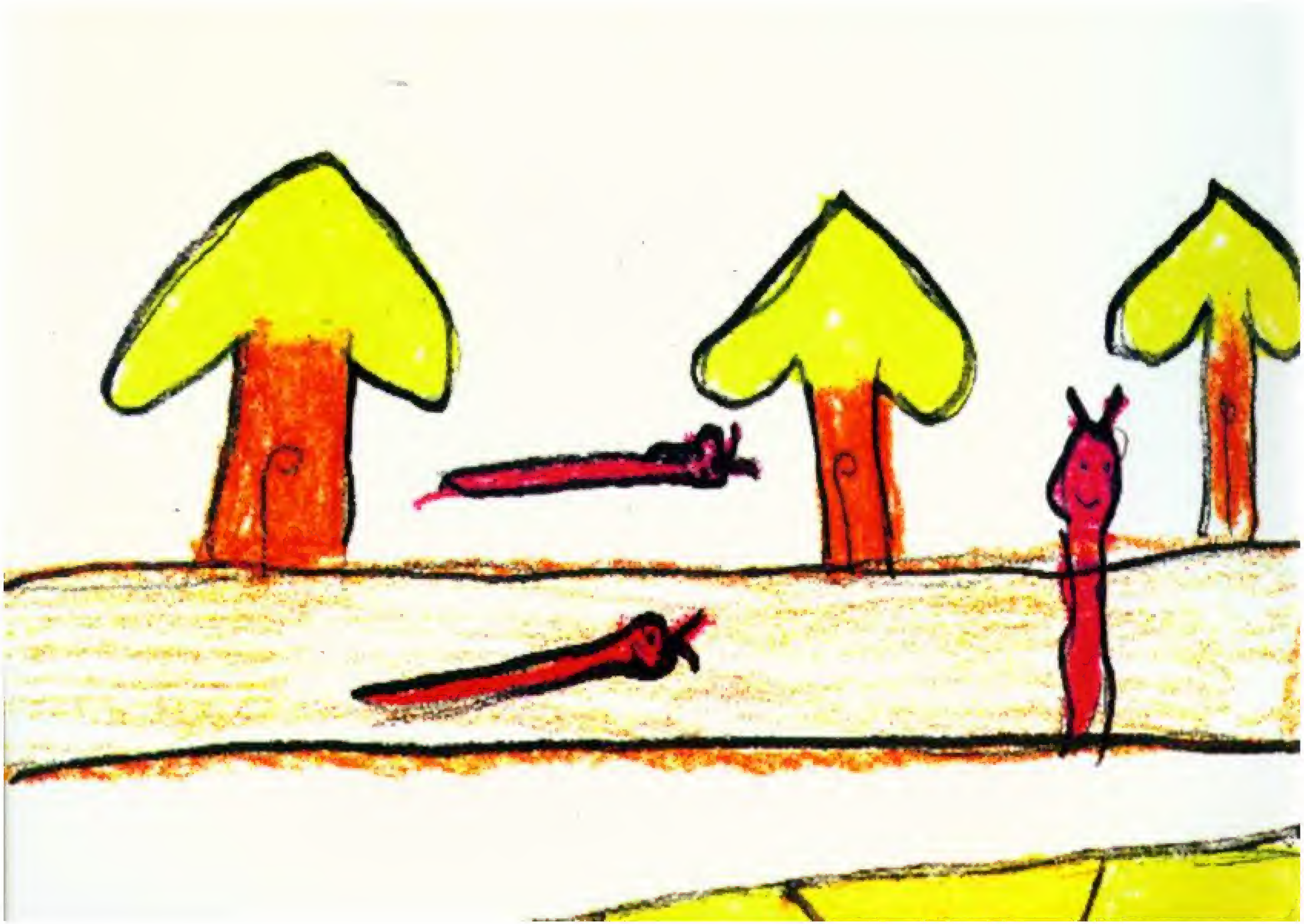

साँप ने सोचा

कहानी: अशोक हुसैन

चित्र: बिदिया पुरबिया

आकल्पन एवं डिज़ाइन: सौम्या मेनन

एकलव्य का प्रकाशन

साँप ने सोचा
SAANP NE SOCHA

कहानीः अशोक हुसैन, मानकुंड, देवास, म.प्र.
[बालकमल (देवास) तथा चकमक सितम्बर, 1989 में प्रकाशित]
चित्रः बिदिया पुरबिया
आकल्पन एवं डिज़ाइनः सौम्या मेनन

© एकलव्य
इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए मुफ्त वितरण हेतु इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

दिसम्बर 2013 / 5000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट व नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-81300-92-3
मूल्यः ₹ 35.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

एक दिन एक साँप इधर-उधर घूमने निकला।

घास पर ...

पानी में ...

झाड़ी में ...

पेड़ पर ...

सड़क पर ...।

साँप के सामने से एक लड़की आ रही थी।

साँप ने सोचा मेरे पास ज़हर है।

लेकिन इस लड़की को काटूँ या नहीं।

फिर साँप ने सोचा यह लड़की मेरी तरफ आ रही है।

तब तो आख्रिर इसको काटना ही पड़ेगा।

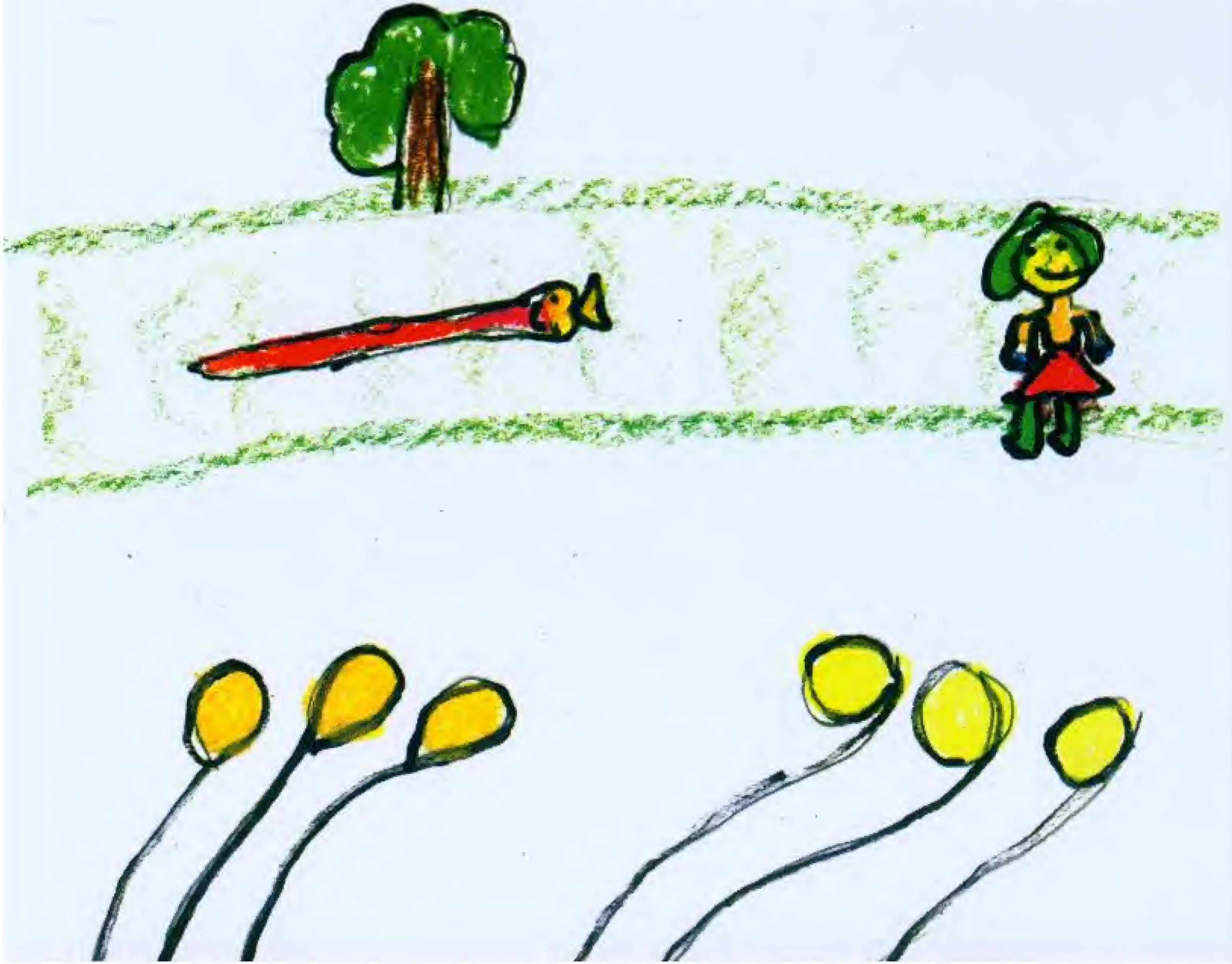

लेकिन एक बात है, जब इसको मैं काटूँगा
तो यह चिल्ला पड़ेगी।

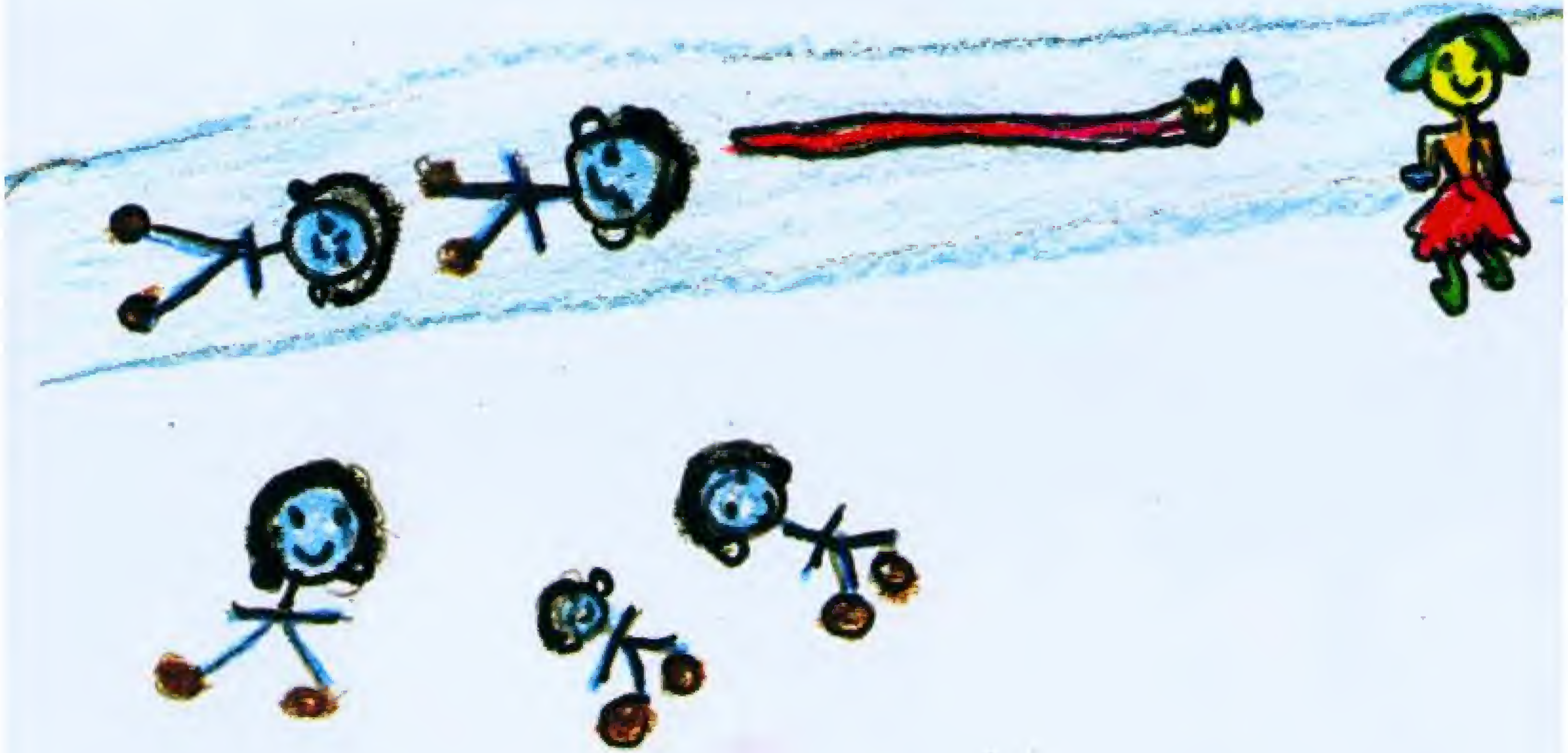

आवाज़ सुनकर लोग दौड़कर आ जाएँगे और
मेरी जमकर सुताई कर देंगे।

इससे अच्छा मुझे ही इस रास्ते को
छोड़कर खिसक लेना चाहिए।

और साँप दूसरा रास्ता पकड़कर चलता बना।

साँप ने सोचा

अगर सड़क पर चलते-चलते अचानक तुम्हें एक साँप मिल जाए तो तुम क्या करोगे? क्या सोचोगे? जवाब बहुत मुश्किल नहीं। पर इस मुलाकात के बारे में साँप ने क्या सोचा होगा, कभी सोचा है तुमने?

इस कहानी में पढ़ो एक साँप के मन की बात...

बिदिया पुरबिया: गौतम नगर, भोपाल की कच्ची बस्ती में रहती हैं और छठवीं की पढ़ाई कर रही हैं। कहानियाँ पढ़ने और लिखने का शौक है। चित्र-कहानियों द्वारा अपनी भावनाओं और विचारों को बखूबी अभिव्यक्त करती हैं। शाम को बस्ती के बच्चों व मम्मी-पापा को कहानियाँ पढ़कर सुनाती हैं। छुट्टी के दिन बिदिया अपनी मम्मी के साथ बीनने जाती हैं। वे बारहवीं से आगे पढ़ना चाहती हैं और बड़ा चित्रकार बनना चाहती हैं, जो अलग-अलग तरह के चित्र बनाए और जिसके चित्रों को हर कोई देखे। इस किताब के चित्र इन्होंने मुस्कान संस्था के सेंटर में पढ़ाई करने के दौरान सौम्या मेनन से एनिमेशन सीखते हुए बनाए हैं।

ISBN: 978-93-81300-92-3

9 789381 300923

एकलव्य

मूल्य: ₹ 35.00

AI224H

parag SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित